No. of Printed Pages : 6

MSK–01

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम. एस. के.-01 : संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

निर्देश : *दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के उत्तर एक ही भाषा में हों।*

खण्ड—क

निर्देश : अधोलिखित में से किसी **एक** की विस्तृत व्याख्या कीजिए। 20

1. विभावादीनां यथासङ्ख्यं कारण कार्य्य सहकारित्वे कथं त्रयाणामपि रसोद्बोध कारणत्वमित्युच्यते—

   कारण–कार्य समचारिरूपा अपि हि लोकतः।
   रसोद्बोधे विभावाद्याः कारणान्येव ते मताः॥

ननु तर्हि कथं रसास्वादे तेषामेकः प्रतिमेकः प्रतिभास इत्युच्यते—

प्रतीयमानः प्रथमं प्रत्येकं हेतुरुच्यते।

ततः संवलितः सर्वो विभावादिः सचेतसाम्।

प्रपागकरसन्यायाच्चर्व्यमाणो रसो भवेत्।

यथा खण्डमरिचादीनां सम्मेलनादपूर्व्व इव कश्चिदास्वादः।

प्रमाणकरसे सञ्जायते विभावादि सम्मेलनादिहापि तथेत्यर्थः॥

अथवा

अथ नायिका त्रिभेदा स्वान्या साधारणा स्त्रीति।

नायक सामान्यगुणैर्भवति यथा संभवैर्युक्ता॥

विनयार्जवार्दियुक्ता गृहकर्मपरा पतिव्रता स्वीया।

यथा—

लज्जापर्याप्त प्रसाधनानि परभृर्तनिष्पिपासानि।

अविनयदुर्मे धानि धन्यायां गृहे कलत्राणि॥

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) धूम ज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः ?
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः॥
इत्यौत्सुक्याद परिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे।
कामाऽऽर्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतना चेतनेषु॥

(ख) तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां।
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्॥
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना।
मुक्ता जाल ग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्॥

(ग) नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी
रालेख्यानां सलिलकणिका दोषमुत्पाद्य सद्यः।
शङ्कास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गै-
र्धूमोद्गारानुकृति निपुणा जर्जरा निष्पतन्ति॥

(घ) संक्षिप्येत ज्ञण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा।

सर्वावस्थास्वहरपि कथं मन्दमन्दातपं स्यात॥

इत्थं चेतश्चदुलनयने। दुर्लभ प्रार्थनां मे।

गाढोष्माभिः कृतमशरणं त्वद्वियोग व्यथाभिः॥

3. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : प्रत्येक 10

(क) न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति न गर्भभा वाणिधुरं वहन्ति।

यवाः प्रकीर्णा न भवन्ति शालयो न वेशजाताः शुचयस्तथाऽ–गनाः॥

(ख) भीमस्यानुकरिष्यामि बाहुःशस्त्रं भविष्यति।

वरं व्यायच्छतो मृत्युर्न गृहीतस्य बन्धने॥

(ग) किं कुलेनापदिष्टेन शीलमेवात्र कारणम्

भवन्ति सुतरां स्फीताः सुक्षेत्रे कष्टकि द्रुमाः।

(घ) यथैव पुष्पं प्रथमे विकाशे समेत्य पातुं मधुपांः पतन्ति।

एव मनुष्यस्य विपत्तिकाले छिद्रेष्व नर्था बहुलीभवन्ति॥

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

$2 \times 10 = 20$

(क) 'रघुवंशम्' महाकाव्य की कथावस्तु का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(ख) कथा साहित्य के उद्भव और विकास का वर्णन कीजिए।

(ग) संस्कृत गद्य की उत्पत्ति और विकास को स्पष्ट करते हुए प्रमुख गद्यकाव्य पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

(घ) चम्पूकाव्य के उद्भव एवं उसकी विकासयात्रा पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

प्रत्येक 5

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(ख) मृच्छकटिकम्

(ग) वेणीसंहारम्

(घ) रत्नावली

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का चरित्र–चित्रण कीजिए : प्रत्येक 5

(क) चारुदत्त

(ख) वसन्तसेना

(ग) यक्षिणी

(घ) शकार

× × × × × × ×